श्री संतोषी माता चालीसा

।।दोहा।।
श्री गणपति पद नाय सिर, धरि हिय शारदा ध्यान ।
संतोषी माँ की करूं, कीरति सकल बखान ।।

।।चौपाई।।
जय संतोषी मां जग जननी । खल मति दुष्ट दैत्य दल हननी ।।
गणपति देव तुम्हारे ताता । रिद्धि सिद्धि कहलावहं माता ।।
माता-पिता की रहौ दुलारी । कीरति केहि विधि कहूं तुम्हारी ।।
क्रीट मुकुट सिर अनुपम भारी । कानन कुंडल को छवि न्यारी ।।
सोहत अंग छटा छवि प्यारी । सुंदर चीर सुनहरी धारी ।।
आप चतुर्भुज सुघड़ विशाला । धारण करहु गले वन माला ।।
निकट है गौ अमित दुलारी । करहु मयूर आप असवारी ।।
जानत सबही आप प्रभुताई । सुर नर मुनि सब करहिं बड़ाई ।।
तुम्हरे दरश करत क्षण माई । दुख दरिद्र सब जाय नसाई ।।
वेद पुराण रहे यश गाई । करहु भक्त की आप सहाई ।।
ब्रह्मा ढ़िंग सरस्वती कहाई । लक्ष्मी रूप विष्णु ढिंग आई ।।
शिव ढिंग गिरजा रूप बिराजी । महिमा तीनों लोक में गाजी ।।
शक्ति रूप प्रगटी जन जानी । रुद्र रूप भई मात भवानी ।।
दुष्ट दलन हित प्रगटी काली । जगमग ज्योति प्रचंड निराली ।।
चण्ड मुण्ड महिषासुर मारे । शुम्भ निशुम्भ असुर हनि डारे ।।
महिमा वेद पुरानन बरनी । निज भक्तन के संकट हरनी ।।
रूप शारदा हंस मोहिनी । निरंकार साकार दाहिनी ।।
प्रगटाई चहुंदिश निज माया । कण-कण में है तेज समाया ।।
पृथ्वी सूर्य चंद्र अरू तारे । तव इंगित क्रमबद्ध हैं सारे ।।
पालन पोषण तुमहीं करता । क्षण भंगुर में प्राण हरता ।।
ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावैं । शेष महेश सदा मन लावैं ।।
मनोकामना पूरण करनी । पाप काटनी भव भय तरनी ।।
चित्त लगाय तुम्हें जो ध्याता । सो नर सुख सम्पत्ति है पाता ।।
बन्ध्या नारि तुमहिं जो ध्यावैं । पुत्र पुष्प लता सम वह पावैं ।।
पति वियोगी अति व्याकुल नारी । तुम वियोग अति व्याकुल यारी ।।
कन्या जो कोई तुमको ध्यावै । अपना मनवांछित वर पावै ।।
शीलवान गुणवान हो मैया । अपने जन की नाव खिवैया ।।
विधि पूर्वक व्रत जो कोई करहीं । ताहि अमित सुख सम्पत्ति भरहीं ।।
गुड़ और चना भोग तोहि भावै । सेवा करै सो आनंद पावै ।।
श्रद्धा युक्त ध्यान जो धरहीं । सो नर निश्चय भव सों तरहीं ।।
उद्यापन जो करहि तुम्हारा । ताको सहज करहु निस्तारा ।।
नारि सुहागिन व्रत जो करती । सुख सम्पत्ति सों गोदी भरती ।।
सो सुमिरन जैसी मन भावा । सो नर वैसो ही फल पावा ।।
सात शुक्र जो ब्रत मन धारे । ताके पूर्ण मनोरथ सारे ।।
सेवा करहि भक्ति युत जोई । ताको दूर दरिद्र दुख होई ।।
जो जन शरण माता तेरी आवै । ताके क्षण में काज बनावै ।।
जय जय जय अम्बे कल्यानी । कृपा करौ मोरी महारानी ।।

जो कोई पढ़ै मात चालीसा । तापे करहिं कृपा जगदीशा ।।
नित प्रति पाठ करै इक बारा । सो नर रहै तुम्हारा प्यारा ।।
नाम लेत ब्याधा सब भागे । रोग दोष कबहूं नहीं लागे ।।

।।दोहा।।
संतोषी मां के सदा बन्दहुं पग निश वास ।
पूर्ण मनोरथ हों सकल मात हरौ भव त्रास ।।

https://alltvads.com/bhajan/lyrics/id/25532/title/shree-santoshi-mata-chalisa

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |